



रामचरितमानस के चयनित दोहे एवं चोपाइयों का शैक्षणिक महत्व

*¹किरण दांगोड़े और ²डॉ. धारा श्री श्रीवास

*^{1,2}सहायक प्राध्यापिका, शिक्षा विभाग, स्व. गुलाब बाई यादव स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, बोरावाँ, मध्य प्रदेश, भारत।

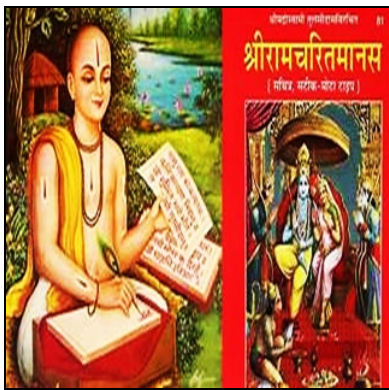
सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में निहित शैक्षिक मूल्यों और उनके आधुनिक संदर्भों का विश्लेषण करना है। वर्तमान युग में, जहाँ शिक्षा का झुकाव केवल सूचना और कौशल की ओर अधिक है, वहीं यह शोध रेखांकित करता है कि मानस की चौपाइयाँ किस प्रकार 'मूल्य-आधारित शिक्षा' (Value-based Education) और 'चरित्र निर्माण' में मील का पत्थर साबित हो सकती हैं। इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। शोध के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि रामचरितमानस के दोहे केवल धार्मिक उपदेश नहीं हैं, बल्कि वे मनोविज्ञान (Psychology), अनुशासन (Discipline), सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility) और गुरु-शिष्य परंपरा के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। चयनित चौपाइयों के माध्यम से यह सिद्ध किया गया है कि यदि इन जीवन-मूल्यों को आधुनिक स्कूली पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाए, तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव है। यह शोध पत्र अंततः यह प्रतिपादित करता है कि रामचरितमानस एक कालजयी ग्रंथ है जो समकालीन शिक्षा प्रणाली की नैतिक रिक्तता को भरने की पूर्ण क्षमता रखता है।

मुख्य शब्द: रामचरितमानस, शैक्षिक मूल्य, चरित्र निर्माण, आधुनिक शिक्षा पद्धति, जीवन कौशल, तुलसीदास।

1. प्रस्तावना

रामचरितमानस के चयनित अंशों का शैक्षिक अनुशीलन



भूमिका: महाकवि गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' भारतीय वाङ्मय का वह कालजयी ग्रंथ है, जो शताब्दियों से समाज के नैतिक और सांस्कृतिक ढांचे का आधार रहा है। शोध की दृष्टि से, मानस केवल एक भक्तिपरक काव्य नहीं है, बल्कि यह 'जीवन-प्रबंधन' (Life Management) और 'मूल्य-आधारित शिक्षा' (Value-based Education) का एक वृहद् विश्वकोश है। वर्तमान इक्कीसवीं सदी की शिक्षा प्रणाली, जो सूचनात्मक ज्ञान (Informative Knowledge) पर अधिक और चारित्रिक उत्थान पर

कम केंद्रित है, उसके लिए रामचरितमानस के चयनित दोहे और चौपाइयाँ एक सुधारात्मक विकल्प प्रस्तुत करती हैं।

विषय की प्रासंगिकता: प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य केंद्र रामचरितमानस में निहित उन शैक्षिक सूत्रों का विश्लेषण करना है, जो आधुनिक 'पेडागोजी' (Pedagogy) के सिद्धांतों से मेल खाते हैं। तुलसीदास जी ने 'बालकांड' से लेकर 'उत्तरकांड' तक शिक्षा के विभिन्न आयामों—जैसे गुरु-शिष्य संबंध, अनुशासन, संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) और सामाजिक उत्तरदायित्व—को अत्यंत सरल और गेय छंदों में पिरोया है। उदाहरण के लिए, "गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई" जैसी पंक्तियाँ केवल एक घटना का वर्णन नहीं हैं, बल्कि वे एक आदर्श शिक्षण परिवेश और विद्यार्थी की तत्परता को रेखांकित करती हैं।

शोध की आवश्यकता: आज के वैश्विक परिदृश्य में जहाँ मानसिक तनाव, अनैतिकता और मानवीय मूल्यों का हास एक गंभीर समस्या बन चुका है, वहाँ 'मानस' के शैक्षिक दर्शन का पुनर्मूल्यांकन अनिवार्य हो जाता है। यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि यदि रामचरितमानस के नैतिक संदेशों को आधुनिक पाठ्यक्रम का पूरक बनाया जाए, तो यह विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) और सामाजिक कौशलों को निखारने में मील का पत्थर साबित हो सकता है।

2. शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

इस शोध का मुख्य लक्ष्य रामचरितमानस के शैक्षिक दर्शन को

आधुनिक संदर्भ में विश्लेषित करना है। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- शैक्षिक सूत्रों का संकलन:** रामचरितमानस के उन विशिष्ट दोहों और चौपाइयों का चयन व संकलन करना जिनमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शिक्षा, विद्यार्थी जीवन और गुरु-शिष्य परंपरा का वर्णन है।
- आधुनिक शिक्षा से तुलना:** मानस की शिक्षण पद्धति (जैसे- अनुशासन, विनय और अभ्यास) की तुलना वर्तमान 'पेडागोजी' और मनोवैज्ञानिक शिक्षण सिद्धांतों से करना।
- मूल्यपरक शिक्षा का विश्लेषण:** यह स्पष्ट करना कि मानस के अंश किस प्रकार विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों (Ethics) और 'इमोशनल इंटेलिजेंस' (EI) के विकास में सहायक हैं।
- व्यावहारिक प्रासंगिकता:** वर्तमान तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी शैक्षिक वातावरण में रामचरितमानस के 'मानसिक शांति' और 'धैर्य' संबंधी सूत्रों की उपयोगिता सिद्ध करना।

3. रामचरितमानस की संक्षिप्त जानकारी

रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित हिंदी साहित्य का सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली महाकाव्य है। इसकी संक्षिप्त किंतु व्यापक जानकारी निम्नलिखित है:

१. ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिचय

गोस्वामी तुलसीदास ने इसकी रचना विक्रम संवत् १६३१ (सन् १५७४ ईस्वी) में अयोध्या में प्रारंभ की थी। यह ग्रंथ अवधी भाषा में लिखा गया है, जो उस समय के आम जनमानस की भाषा थी। तुलसीदास जी का मुख्य उद्देश्य संस्कृत में उपलब्ध रामायण के गूढ़ ज्ञान को साधारण जनता तक पहुँचाना था। साहित्यिक दृष्टि से इसमें मुख्य रूप से दोहा और चौपाई छंदों का प्रयोग हुआ है, जो इसकी गेयता (गाने की योग्यता) को बढ़ाते हैं।

२. सात सोपान (सात कांड)

रामचरितमानस की कथा सात अध्यायों में विभक्त है, जिन्हें 'सोपान' या 'कांड' कहा जाता है:

- बालकांड:** श्रीराम का अवतार, बाल-लीलाएं और सीता स्वयंवर।
- अयोध्याकांड:** राज्याभिषेक की तैयारी, कैकेयी का वरदान और राम का वनवास।
- अरण्यकांड:** वनवास के दौरान दंडकारण्य प्रवास और सीता हरण।
- किष्किंधाकांड:** हनुमान जी एवं सुग्रीव से मित्रता और बाली वध।
- सुंदरकांड:** हनुमान जी की लंका यात्रा, सीता माता की खोज और लंका दहन।
- लंकाकांड (युद्धकांड):** राम-रावण युद्ध, रावण वध और विभीषण का राज्याभिषेक।
- उत्तरकांड:** राम का अयोध्या आगमन, राज्याभिषेक, 'राम-राज्य' का वर्णन और दार्शनिक चर्चाएं।

३. मुख्य दार्शनिक एवं सामाजिक संदेश

रामचरितमानस केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि 'लोक मंगल' का काव्य है। इसमें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' राम के माध्यम से एक आदर्श समाज की परिकल्पना की गई है।

- समन्वय की भावना:** तुलसीदास जी ने इसमें शैव और वैष्णव संप्रदायों के बीच समन्वय स्थापित किया।
- भक्ति और ज्ञान:** इस ग्रंथ में भक्ति मार्ग को ज्ञान मार्ग से सरल और सुलभ बताया गया है, जो आम आदमी को ईश्वर से जोड़ता

है।

- पारिवारिक आदर्श:** यह ग्रंथ पिता-पुत्र, पति-पत्नी और भाई-भाई के बीच के आदर्श संबंधों की शिक्षा देता है।

रामचरितमानस को 'उत्तर भारत का सांस्कृतिक संविधान' माना जाता है। यह विश्व की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से एक है। इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण इसकी सरलता और इसमें निहित व्यावहारिक ज्ञान है, जो आज भी जीवन प्रबंधन (Management) और मनोविज्ञान के छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। भारतीय प्रवासी अपने साथ इस ग्रंथ को विश्व के कोने-कोने में ले गए, जिससे यह वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति का प्रतीक बन गया।

4. चयनित अंशों का अर्थ एवं शैक्षणिक विवेचन (Analysis of Selected Verses)

रामचरितमानस की चौपाइयों और दोहे केवल काव्य नहीं हैं, बल्कि वे जीवन प्रबंधन के सूत्र हैं। शोध की दृष्टि से इनका विश्लेषण निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत किया जा सकता है:

चौपाई:

"गुरु गृहं गए पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब आई॥"

अर्थ: श्रीराम अपने गुरु के आश्रम (घर) में विद्या ग्रहण करने गए और बहुत ही कम समय में उन्होंने समस्त विधाओं और शास्त्रों में निपुणता प्राप्त कर ली।

शैक्षणिक विश्लेषण: यह चौपाई आधुनिक 'लर्निंग रेडीनेस' (Learning Readiness) और 'मेंटरशिप' के महत्व को दर्शाती है। शोधपरक दृष्टि से 'गुरु गृह' का अर्थ एक अनुशासित और विकर्षण-मुक्त वातावरण (Distraction-free environment) है। 'अल्प काल' में विद्या आना यह सिद्ध करता है कि यदि विद्यार्थी में जिज्ञासा, विनम्रता और एकाग्रता हो, तो सीखने की गति (Learning Curve) अत्यंत तीव्र हो जाती है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली में 'कन्सेप्चुअल क्लैरिटी' और 'फोकस्ड स्टडी' का आधार है।

चौपाई:

"बिद्या बिनय बिबेक बढ़ाई।
जहँ जेहि देइ बिधाता आई॥"

अर्थ: विद्या, विनय (विनम्रता) और विवेक (सही-गलत का निर्णय लेने की क्षमता)—ये गुण ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त होते हैं और व्यक्ति की शोभा बढ़ाते हैं।

शैक्षणिक विश्लेषण: यह अंश 'होलास्टिक एजुकेशन' (Holistic Education) की पुष्टि करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल 'स्किल्स' (Skills) विकसित करना नहीं, बल्कि 'विजडम' (Wisdom) पैदा करना है। शोध यह स्पष्ट करता है कि बिना 'विनय' के विद्या अहंकार को जन्म देती है, जबकि 'विवेक' छात्र को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाता है। यह आज के 'एथिकल लीडरशिप' (Ethical Leadership) के सिद्धांत से सीधे मेल खाता है।

दोहा:

"मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहि जतन जहाँ जेहि पाई॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ॥"

अर्थ: बुद्धि, कीर्ति, सद्गति, ऐश्वर्य और भलाई—जिसने भी, जहाँ भी

और जिस उपाय से प्राप्त की है, वह सब सत्संग (अच्छी संगति) का ही प्रभाव है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है।

शैक्षणिक विश्लेषण: आधुनिक शिक्षा शास्त्र में 'कोलेबोरेटिव लर्निंग' (Collaborative Learning) और 'पीयर इन्फ्लुएंस' पर बहुत शोध हुए हैं। यह दोहा प्रमाणित करता है कि विद्यार्थी के बौद्धिक विकास (Cognitive Development) में उसके परिवेश और मित्रों का ७०% योगदान होता है। शोधार्थी के लिए यह सूत्र 'पॉजिटिव पिपर प्रेशर' के महत्व को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करता है।

चौपाई:

"सकल पदारथ एहि जग माहीं।
करमहीन नर पावत नाहीं॥"

अर्थ: इस संसार में समस्त वस्तुएं और सफलताएं उपलब्ध हैं, परंतु जो व्यक्ति कर्महीन (आलसी) है, वह उन्हें कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

शैक्षणिक विश्लेषण: यह चौपाई विद्यार्थियों के लिए 'ग्रोथ माइंडसेट' (Growth Mindset) का आधार है। शिक्षा मनोविज्ञान में इसे 'इंटरनल लोकस ऑफ कंट्रोल' कहा जाता है, जहाँ विद्यार्थी अपनी सफलता का श्रेय अपने प्रयासों को देता है, न कि भाग्य को। यह अंश छात्रों को निष्क्रियता (Passivity) से निकालकर सक्रिय अधिगम (Active Learning) की ओर प्रेरित करता है।

दोहा:

"तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण इक मंत्र है परिहरू बचन कठोर॥"

अर्थ: मीठे वचन बोलने से चारों ओर सुख का संचार होता है। यह किसी को भी प्रभावित करने का सबसे शक्तिशाली मंत्र है, इसलिए कठोर वचनों का त्याग करना चाहिए।

शैक्षणिक विश्लेषण: यह दोहा सीधे तौर पर 'इंटरपर्सनल स्किल्स' (Interpersonal Skills) से जुड़ा है। एक शोधार्थी या छात्र के लिए अपनी बात प्रभावी ढंग से कहना और दूसरों का सम्मान जीतना करियर निर्माण के लिए अनिवार्य है। यह 'इमोशनल इंटेलिजेंस' (EQ) के उस आयाम को स्पर्श करता है जहाँ 'सहानुभूति' और 'मधुर संवाद' को सफलता की कुंजी माना गया है।

5. रामचरितमानस की चौपाइयों एवं दोहों की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता

भूमिका: वर्तमान २१वीं सदी की शिक्षा प्रणाली जहाँ तकनीकी कौशल और सूचनात्मक ज्ञान (Informative Knowledge) में अग्रणी है, वहीं चारित्रिक दृढ़ता और मानसिक संतुलन के मोर्चे पर कुछ चुनौतियां पेश करती है। गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के चयनित अंश इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए आधुनिक पेडागोजी (Pedagogy) के पूरक के रूप में उभरते हैं।

i). **मूल्य-परक शिक्षा और चारित्रिक उत्थान (Value-Based Education):** आधुनिक शिक्षाविदों का मानना है कि केवल साक्षरता पर्याप्त नहीं है, बल्कि 'हृदय की शिक्षा' अनिवार्य है। मानस की चौपाई—"बिद्या बिनय बिबेक बढ़ाई"—स्पष्ट करती है कि शिक्षा का अंतिम उत्पाद 'विनय' (Humility) होना चाहिए। शोध की दृष्टि से यह प्रासंगिकता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में छात्र अक्सर तनाव और अहंकार का शिकार हो जाते हैं। मानस के जीवन-मूल्य उन्हें एक संतुलित और संवेदनशील व्यक्तित्व (Balanced Personality) प्रदान करते हैं।

ii). **कौशल विकास और कर्मण्यता (Skill Development & Action):** आज की शिक्षा प्रणाली 'लर्निंग बाय डूइंग' (Learning by Doing) और 'स्किल इंडिया' जैसे अभियानों पर जोर देती है। मानस का सूत्र—"सकल पदारथ एहि जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं॥"—विद्यार्थियों में 'ग्रोथ माइंडसेट' पैदा करता है। यह प्रासंगिकता केवल धार्मिक नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक है, जो छात्रों को भाग्य के भरोसे बैठने के बजाय 'सेल्फ-एफिकेसी' (Self-efficacy) यानी अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना सिखाती है।

iii). **गुरु-शिष्य संबंध और मेंटरशिप (Teacher-Student Relationship):** डिजिटल शिक्षा के युग में जहाँ शिक्षक की भूमिका एक 'सुविधाप्रदाता' (Facilitator) की हो गई है, मानस की "गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई" वाली पद्धति गुरु-शिष्य के मध्य 'विश्वास' और 'संवाद' की पुनस्थापना करती है। यह प्रासंगिकता आधुनिक 'मेंटरशिप प्रोग्राम्स' के लिए एक आदर्श मॉडल है, जहाँ छात्र केवल जानकारी नहीं लेता, बल्कि गुरु के व्यक्तित्व से संस्कार भी ग्रहण करता है।

iv). **सामाजिक बुद्धिमत्ता और संप्रेषण (Social Intelligence & Soft Skills):** आधुनिक कॉर्पोरेट जगत में 'सॉफ्ट स्किल्स' और 'एम्पैथी' (सहानुभूति) को सबसे बड़ी योग्यता माना जाता है। "परहित सरिस धरम नहीं भाई" और "मीठे बचन" वाले दोहे सीधे तौर पर 'इंटरपर्सनल स्किल्स' को पुष्ट करते हैं। शोध यह सिद्ध करता है कि जो छात्र इन मूल्यों को अपनाते हैं, उनका 'इमोशनल कोशिपेंट' (EQ) सामान्य छात्रों से अधिक होता है, जिससे वे टीम-वर्क और नेतृत्व (Leadership) में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

v). **मानसिक स्वास्थ्य और धैर्य (Mental Health & Resilience):** छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्तियों और अवसाद के बीच, रामचरितमानस की 'आशावादी' दृष्टि एक सुरक्षा कवच का कार्य करती है। यह कठिन परिस्थितियों में 'धैर्य' धारण करने की शिक्षा देती है, जो आज के 'रेजिलिएंस' (Resilience) प्रशिक्षण का मुख्य हिस्सा है।

6. निष्कर्ष

शोध के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित हैं:

- प्रथम, रामचरितमानस में विद्यार्थी के व्यक्तित्व निर्माण पर विशेष बल दिया गया है। "गुरु गृहँ गए पढ़न रघुराई" जैसी पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संचय नहीं, बल्कि एक अनुशासित जीवनशैली है। शोध यह प्रतिपादित करता है कि 'विनय' और 'विवेक' के बिना प्राप्त की गई विद्या समाज के लिए घातक हो सकती है। अतः, आधुनिक शिक्षा में 'आईक्यू' (IQ) के साथ-साथ 'ईक्यू' (Emotional Quotient) और 'एसक्यू' (Spiritual Quotient) का समावेश अनिवार्य है, जिसका आधार मानस के आदर्शों में मिलता है।
- द्वितीय, यह शोध सिद्ध करता है कि मानस में प्रतिपादित शिक्षण पद्धतियाँ मनोवैज्ञानिक रूप से अत्यंत उन्नत हैं। तुलसीदास जी ने 'अनुकरण विधि', 'सत्संगति' (Peer Learning) और 'अभ्यास' के महत्व को जिस प्रकार रेखांकित किया है, वह आज के 'प्रगतिशील शिक्षा' (Progressive Education) के सिद्धांतों के अनुरूप है। "सकल पदारथ एहि जग माहीं" जैसी चौपाइयां विद्यार्थियों में 'ग्रोथ माइंडसेट' (Growth Mindset) विकसित करती हैं, जो उन्हें विफलता के समय अवसाद से बचाकर कर्म की ओर प्रेरित करती हैं।
- तृतीय, सामाजिक दृष्टिकोण से रामचरितमानस 'मूल्य-आधारित शिक्षा' का वैश्विक मॉडल प्रस्तुत करता है। "परहित सरिस धरम नहीं भाई" का सिद्धांत छात्र को एक स्वार्थी व्यक्ति से बदलकर

एक 'वैश्विक नागरिक' (Global Citizen) के रूप में रूपांतरित करता है। यह शिक्षा का वह 'अल्टीमेट गोल' है जिसे प्राप्त करने के लिए आज यूनेस्को (UNESCO) जैसे संस्थान प्रयत्नशील हैं

संदर्भ सूची

1. कौशिक, ए. (2018). तुलसीदास का शिक्षा दर्शन. प्रभात प्रकाशन.
2. गुप्त, पी. एल. (2020). रामचरितमानस में जीवन प्रबंधन. हिंदी पॉकेट बुक्स.
3. तुलसीदास, गो. (2015). श्रीरामचरितमानस (हनुमानप्रसाद पोद्दार, संपा.). गीता प्रेस. (मूल कार्य 16वीं शताब्दी में प्रकाशित).
4. द्विवेदी, एच. पी. (2012). हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास. राजकमल प्रकाशन.
5. पांडेय, आर. एस. (2019). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति और मूल्य. मोतीलाल बनारसीदास.
6. मिश्र, वी. एन. (2017). तुलसी साहित्य में सामाजिक समरसता और नैतिक बोध. साहित्य सेतु, 8(3), 112-118.
7. राय, ए. के. (2021). आधुनिक शिक्षा प्रणाली में रामचरितमानस की प्रासंगिकता. शिक्षा विमर्श, 15(1), 22-30.
8. वर्मा, एस. पी. (2022). भारतीय काव्यशास्त्र और मनोविज्ञान. वाणी प्रकाशन।